वन धन उत्पादक कंपनियाँ

प्रलिम्सि के लयि:

वन धन कार्यक्रम, आकांक्षी ज़लि, प्रधानमंत्री वन धन योजना, भारतीय जनजातीय सहकारी वपिणन वकिास महासंघ

मेन्स के लयि:

वन धन उत्पादक कंपनियाँ स्थापति करने का आदवासी समुदाय पर प्रभाव

चर्चा में क्यों?

जनजातीय मामलों के मंत्रालय ने **वन धन कार्यक्रम** के तहत **आकांक्षी ज़लिों** को प्राथमकिता के साथ अगले पाँच वर्षों में सभी 27 राज्यों में 200 'वन धन' उत्पादक कंपनियाँ स्थापति करने की योजना बनाई है।

- आकांक्षी ज़लि भारत के वे ज़लि हैं जो खराब सामाजकि-आर्थकि संकेतकों से प्रभावति हैं। 'ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ एस्परिशनल डस्ट्रिक्ट्स प्रोग्राम' (TADP) को केंद्रीय स्तर पर **नीतआियोग** द्वारा क्रयािन्वति किया जा रहा है।

प्रमुख बदिु

वन धन कार्यक्रम:

- **परचिय:** यह जनजातीय सवयं सहायता समूहों (एसएचजी) का गठन करने और उन्हें जनजातीय उत्पादक कंपनयिों में मज़बूत करने हेतु बाज़ार से जुड़ा एक आदवासी उद्यमति वकिास कार्यक्रम है।
    - यह पहल वन धन यानी वन धन का उपयोग करके आदवासियों के लयि आजीवकि सृजन को लक्षति करती है।
- **लॉन्च: इस योजना को 2018 में** प्रधानमंत्री वन धन योजना **(PMVDY) के रूप में लॉन्च किया गया था।**
- **कार्यान्वयन**: इसे ट्राइबल कोऑपरेटवि मार्केटगि डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडयिा लमिटिेड (TRIFED) द्वारा कार्यान्वति किया जा रहा है।
- **लक्ष्य:**
    - प्रत्येक चरण में इसे उन्नत करने और जनजातीय ज्ञान को एक व्यवहार्य आर्थकि गतविधिमिें परविर्तति करने के लयि प्रौद्योगकिी और आईटी को जोड़कर आदवासियों के पारंपरकि ज्ञान और कौशल की जानकारी देना।
    - उन क्षेत्रों में जहाँ ये अभी भी प्रचलति हैं, बाज़ार को मज़बूती प्रदान करने के लयि एक व्यवहार्य पैमाने के माध्यम से आदवासियों की सामूहकि ताकत को बढ़ावा देना और उसका लाभ उठाना।
    - मुख्य रूप से आदवासी ज़लिों में आदवासी समुदाय के स्वामत्वि वाले लघु वन उत्पाद (एमएफपी) केंद्रति बहुउद्देश्यीय वन धन वकिास केंद्र स्थापति करने का प्रस्ताव है।

भारतीय जनजातीय सहकारी वपिणन वकिास महासंघ (TRIFED):

- ट्राइफेड राष्ट्रीय स्तर का एक शीर्ष संगठन है जो जनजातीय मामलों के मंत्रालय के प्रशासनकि नयिंत्रण में कार्य करता है।
- ट्राइफेड का उद्देश्य जनजातीय लोगों को ज्ञान, उपकरण और सूचना के साथ सशक्त बनाना है ताकवि अपने संचालन को अधकि व्यवस्थति और वैज्ञानकि तरीके से कर सकें।
- यह जनजातीय उत्पादकों के आधार के वस्तिार हेतु राज्यों/ज़लिों/गाँवों में सोर्सगि स्तर पर नए कारीगरों और उत्पादों की पहचान करने के लयि जनजातीय कारीगर मेलों (Tribal Artisan Melas- TAMs) का आयोजन करता है।
- यह **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)** के माध्यम से **लघु वनोत्पाद (MFP)** के वपिणन के लयि तंत्र और MFP हेतु मूल्य शृंखला के वकिास हेतु जनजातीय पारस्थितिकिी तंत्र से भी जुड़ा है।
- ट्राइफेड जनजातीय आजीवकि कार्यक्रम के साथ कौशल वकिास और सूक्ष्म उद्यमति कार्यक्रम का भी वस्तिार कर रहा है।

जनजातीय आजीविका कार्यक्रम

- **वन अधिकार अधिनियम, 2006:** इसने जनजातीय समुदायों को पर्याप्त स्वामित्व अधिकार दिये हैं। यह इस मायने में एक पथप्रदर्शक अधिनियम है कि पहली बार इसने न केवल पारंपरिक वनवासियों को वन भूमि के वैध मालिकों के रूप में मान्यता दी, बल्कि उनके संरक्षण हेतु भी जवाबदेह बनाया।
- **पेसा 'पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) विधेयक, 1996 :** यह ग्राम पंचायत को वन उपज और जनजातियों के मुद्दों के समाधान हेतु स्वामित्व और अधिकार प्रदान करता है।
- **जनजातियों की शिक्षा:** जनजातीय समुदायों के बच्चों की शिक्षा के लिये आदिवासी बहुल प्रखंडों में कई बालिका छात्रावास और आश्रम स्थापित किये गए हैं।
  - आदिवासी छात्रों की शिक्षा के लिये **एकलव्य मॉडल रेज़िडेंशियल स्कूल** (EMRS) स्थापित किये गए हैं।
- **वनबंधु कल्याण योजना:** यह भारत की जनजातीय आबादी के समग्र विकास और कल्याण हेतु केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई योजना है।
  - इस योजना में देश की जनजातीय आबादी को अन्य सामाजिक समूहों के बराबर लाने और उन्हें राष्ट्र की समग्र प्रगति में शामिल करने का प्रस्ताव है।
  - सरकार का उद्देश्य मानव विकास सूचकांकों में अवसंरचनात्मक अंतरालों और कमियों को दूर करके आदिवासियों का समग्र विकास करना है।
- **जनजातीय हस्तशिल्प:** वनों के घटते क्षेत्रफल के कारण आदिवासियों के लिये रोज़गार के अवसर कम होते जा रहे हैं।
  - ट्राइफेड द्वारा ट्राइब्स इंडिया की स्थापना की गई है, जो शोरूम की एक शृंखला है, जहाँ जनजातीय वस्त्र, आदिवासी आभूषण जैसे हस्तशिल्प की कई श्रेणियों का विपणन किया जा रहा है।
  - ट्राइफेड जनजातियों के क्षमता निर्माण हेतु भी कार्य कर रहा है।

स्रोत: पी. आई.बी

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/van-dhan-producer-companies